Gupta period (Part -18)

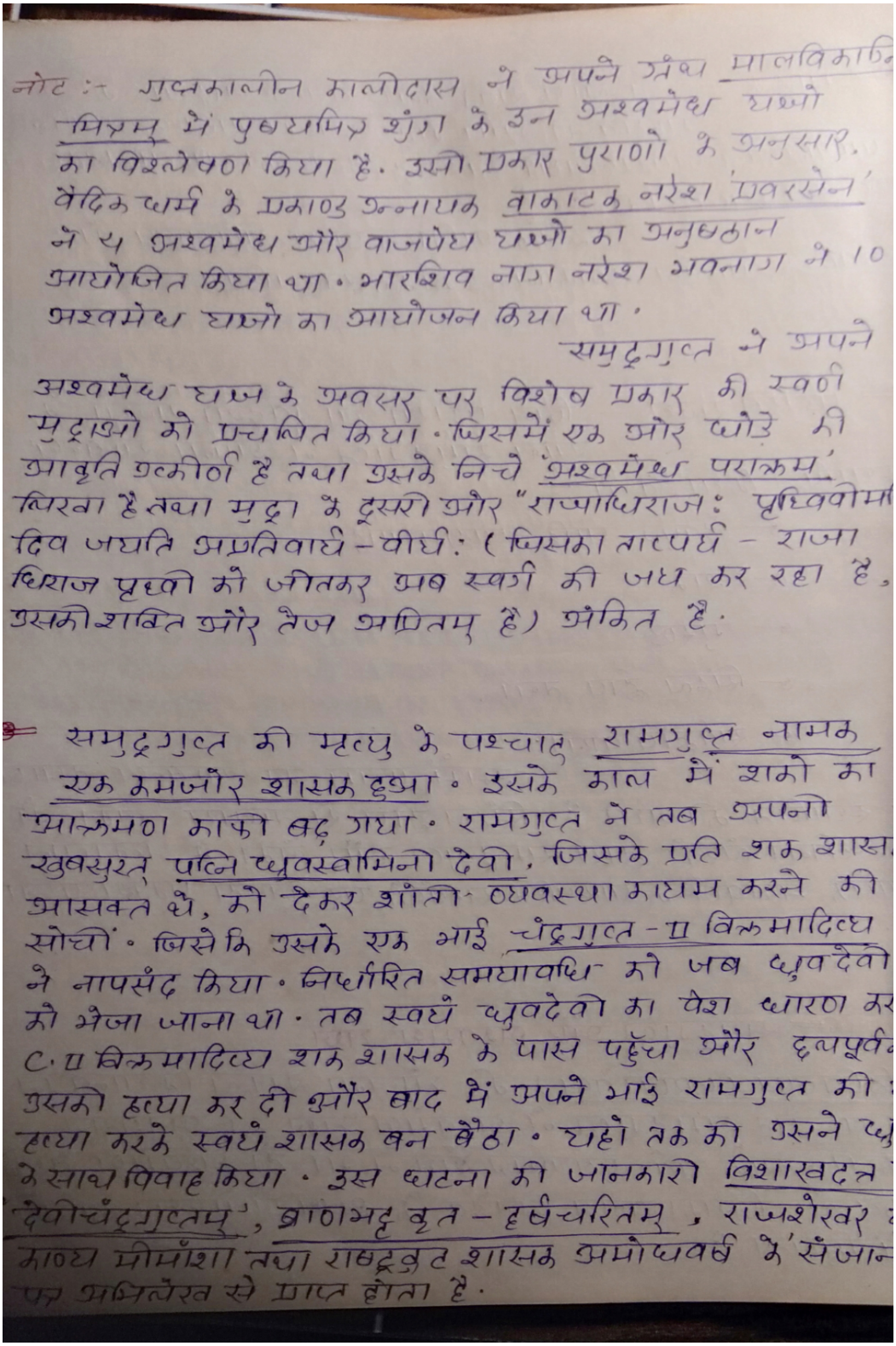

नोट :- गुप्तकालीन कालीदास ने अपने ग्रंथ मालविकाग्निमित्रम् में पुष्यमित्र शुंग के इन अश्वमेध यज्ञो का विश्लेषण किया है. इसी प्रकार पुराणो के अनुसार, वैदिक धर्म के प्रकाण्ड उन्नायक वाकाटक नरेश 'प्रवरसेन' ने 4 अश्वमेध और वाजपेय यज्ञो का अनुष्ठान आयोजित किया था। भारशिव नाग नरेश भवनाग ने 10 अश्वमेध यज्ञो का आयोजन किया था।

समुद्रगुप्त ने अपने अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर विशेष प्रकार की स्वर्ण मुद्राओ को प्रचलित किया। जिसमें एक ओर घोड़े की आकृति उत्कीर्ण है तथा उसके निचे 'अश्वमेध पराक्रम' लिखा है तथा मुद्रा के दूसरी ओर "राजाधिराजः पृथ्वीमवि दिव जयति अप्रतिवार्य-वीर्यः (जिसका तात्पर्य - राजाधिराज पृथ्वी को जीतकर अब स्वर्ग की जय कर रहा है, उसकी शक्ति और तेज अप्रतिम है) अंकित है।

समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात् रामगुप्त नामक एक कमजोर शासक हुआ। इसके काल में शको का आक्रमण काफी बढ़ गया। रामगुप्त ने तब अपनी खुबसुरत पत्नि ध्रुवस्वामिनी देवी, जिसके प्रति शक शासक आसक्त थे, को देकर शांति व्यवस्था कायम करने की सोची। जिसे कि उसके एक भाई चंद्रगुप्त-II विक्रमादित्य ने नापसंद किया। निर्धारित समयावधि को जब ध्रुवदेवी को भेजा जाना था। तब स्वयं ध्रुवदेवी का वेश धारण कर C.II विक्रमादित्य शक शासक के पास पहुँचा और छलपूर्वक उसकी हत्या कर दी और बाद में अपने भाई रामगुप्त की हत्या करके स्वयं शासक बन बैठा। यहाँ तक की उसने ध्रु[illegible] के साथ विवाह किया। इस घटना की जानकारी विशाखदत्त [illegible] 'देवीचंद्रगुप्तम्', बाणभट्ट कृत - हर्षचरितम्, राजशेखर [illegible] काव्य मीमांसा तथा राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष के 'संजान ताम्र'पत्र अभिलेख से प्राप्त होता है।